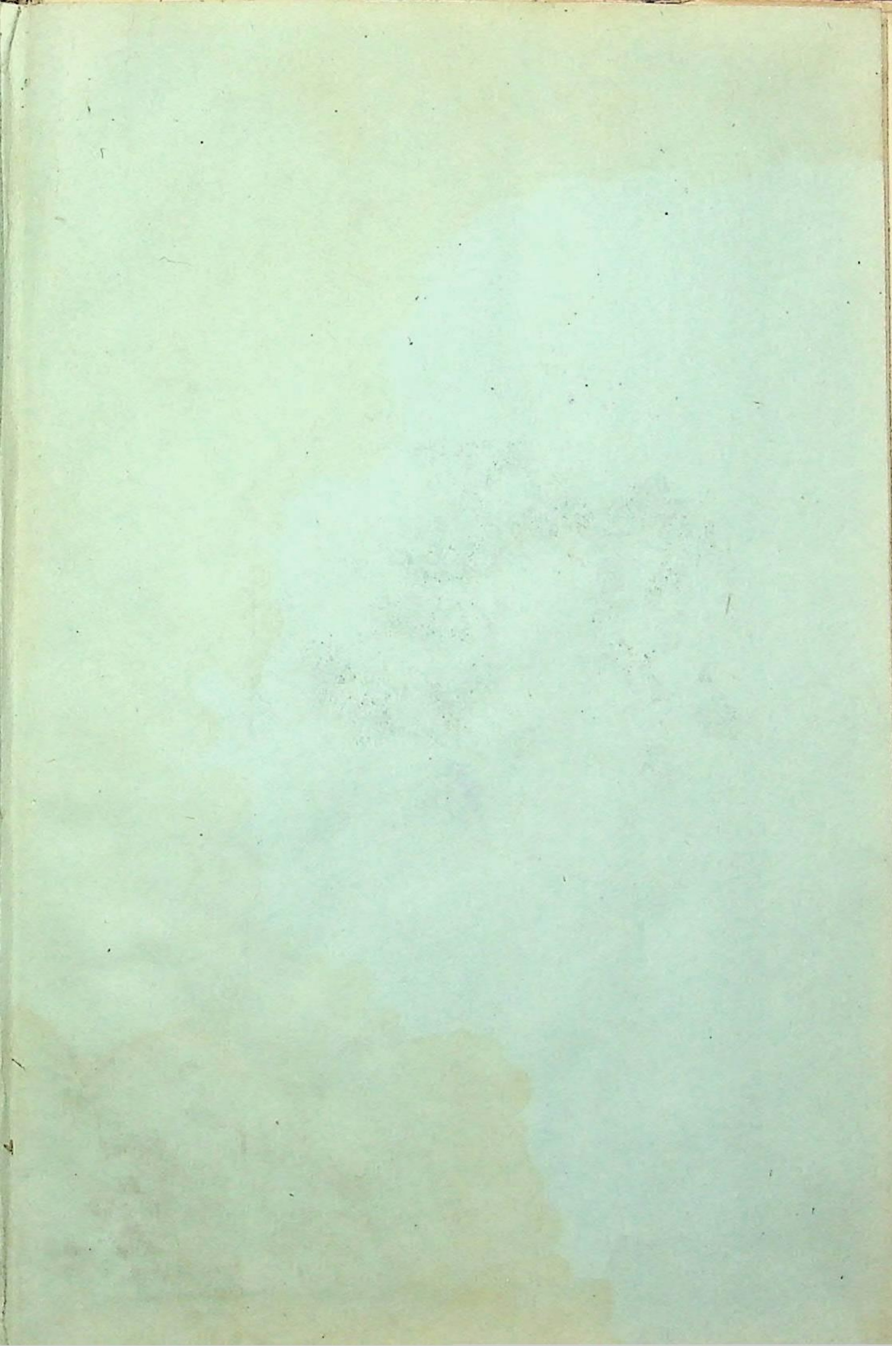
धूप की तरह खिला वर्तमान



बलनील देवम्

धूप की तरह खिला वर्तमान

वाद और गुटों से मुक्त युवा कवि बलनील देवम् की कविताएँ व्यक्ति के अन्तस की कविताएँ हैं। प्रस्तुत संग्रह में अन्तस के अतल तल से निकली सूक्ष्म प्रेम भावों को सहजतम शैली में अभिव्यक्त करती बाइस प्रेम कविताएँ हैं।

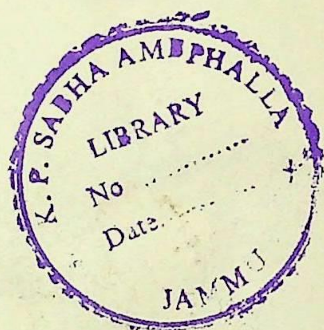


धूप

वाद और गु
की कविता
प्रस्तुत संग्र
सूक्ष्म प्रेम
करती बा

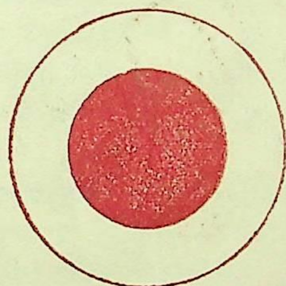


धूप की तरह खिला वर्तमान




छलनी
केवल

धूप की तरह खिला वर्तमान



निस्तंद्र प्रकाशन
जम्मू (तवी)

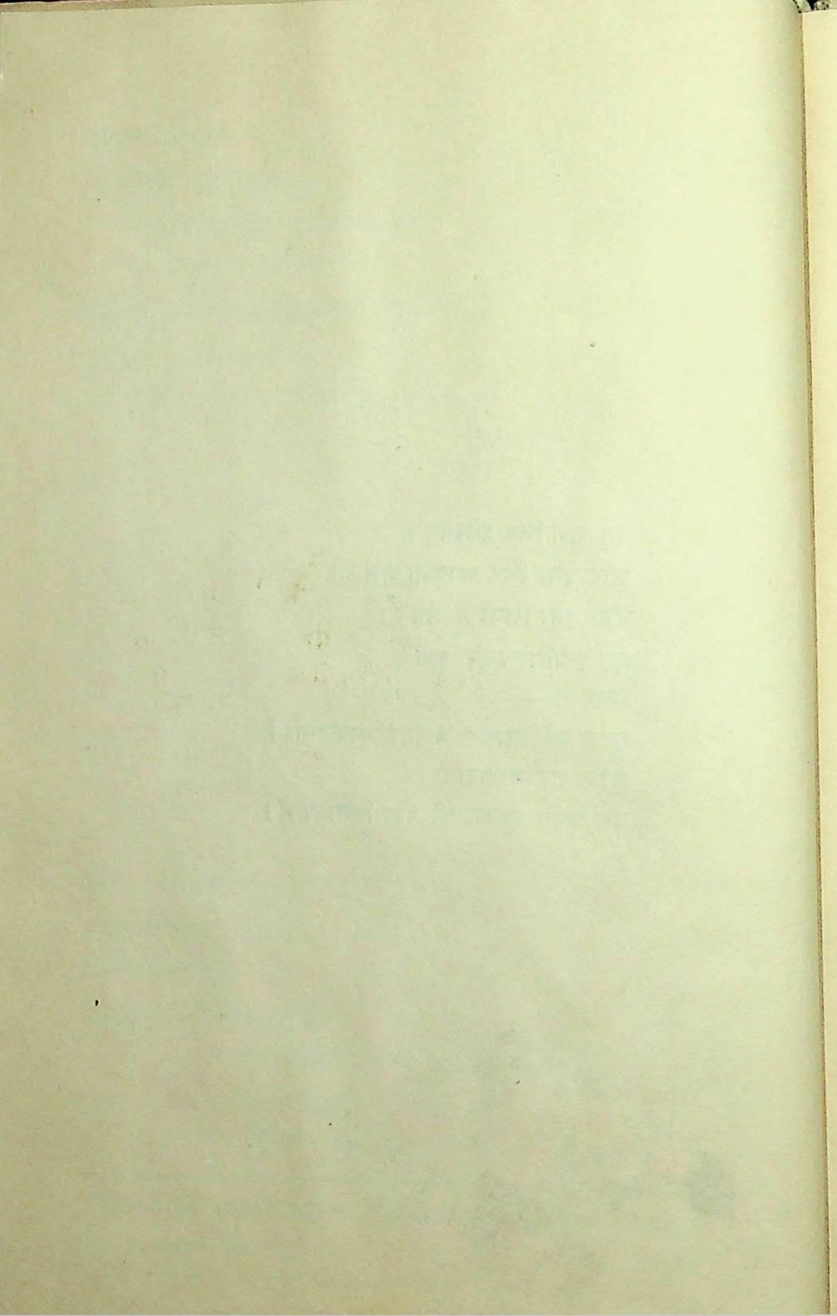
अधिकृत वितरक—
सीमान्त प्रकाशन
922, कूचा रुहेल खां, दरियागंज,
नई दिल्ली-110002
दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा० लि०
ई-3, रानी झांसी रोड,
झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055

मूल्य : दस रुपये (10.00)
प्रथम संस्करण : 1980

प्रकाशक : निस्तंद्र प्रकाशन,
35, कूचा कर्मचन्द, जम्मू (तवी)-180001
मुद्रक : नव प्रभात प्रिंटिंग प्रेस
शाहदरा दिल्ली-110032

Dhoop Ki Tarhe Khila Vartmaan (Hindi poetry)
by Balneel Devam
Rs. 10.00

वह क्षण चिर शाश्वत है
और उसी चिर शाश्वत क्षण को
नींव बना लिया है हमने।
हम स्माधिस्थ हो चुके हैं
देखो तो—
सूरज हमें देखकर कितना मुस्कराता है
सूरज का मुस्कराना
उस प्रथम चुम्बन की याद दिलाता है।



संत्रास/कुण्ठा / पीड़ा
यंत्रणा/जड़ता /तृषा
इन्हीं शब्दों की परिधि में / दलित हो रहा
बन्धु ।
मानसिकता से चिपटा
अकर्मण्यता का कीड़ा
कोंचे जा रहा......

यातनायुग की / अन्तर्सिसकियां
मेरी अन्तरात्मा को मथ रहीं

हे नीलकंठ !
आत्मपीड़ित समष्टि के / संताप
हरने का सामर्थ्य
आपके कण्ठ में ही है ।

आशीर्वाद दें ।

बाईस प्रेम कविताएं

अनुक्रम

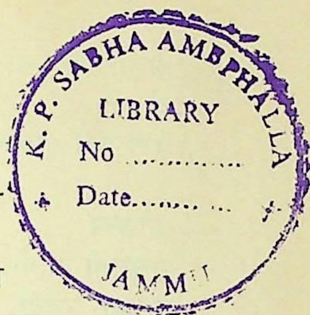
तेरी-मेरी आत्मगंध भरी हवाएं

मैंने तो सोचा था
कि,
मेरी आत्मगंध की मुहर लगी
हवाएं
लौट आएंगी बैरंग
और
पिघल पड़ेंगी आकर
मेरी आंखों में बहते
इंतज़ार के दरिया में;
एक भयावह स्थिति उत्पन्न करती हुई।
रोम-रोम हो जाएगा नम
आत्मपीड़ा की बास आएगी
सांसों से

और उम्र भर सोचता रहूंगा
कि,
यह जन्म भी हो गया
व्यर्थ।

परन्तु जब हवाएं लौटीं
तो उनमें थी तुम्हारी आत्मगंध की
चिरन्तन रहने वाली महक।
मुझे आश्चर्य के सागर में
डूब जाना चाहिए था
पर तब मैं आश्चर्य नाम की
वस्तु को
जान भी नहीं पाया।
हवाएं
तेरी-मेरी आत्मगंध लिए
मेरे आंगन में
मचलती रहीं,
बहकती रहीं,
महकती रहीं,
गुनगुनाती रहीं।

उन हवाओं से
लिपट-लिपट कर मैंने
सारे स्वाद जान लिए,
सारे छंद गा लिए,
सारे अर्थ पा लिए।



तुम्हारी नवनीत-सी मृदुल
शुभ्र बांहों पर करांगुलियां
फेरते हुए
तुम्हारे रोओं का सिहर-सिहर जाना—
तुम्हारे अधखुले नयनपटों के भीतर
ठाठें मारता
भूरी आंखों का समन्दर—
मुस्कानामृत बरसाते हुए अधरकोरों का
थरथरा जाना—
घनेरी श्यामल अलकावलि का
सावनी बादलों की तरह
छा जाना—
और कभी
सिकुड़-सिमट कर
दो चोटियों में बंध जाना—
तुम्हारे वक्षस्थल में
दहकती
धड़कती
प्यार की मीठी-मीठी आंच—
क्या कुछ अनुभव नहीं दे दिया मुझे
इन हवाओं ने;
तेरी-मेरी आत्मगंध भरी हवाओं ने।

तुम कभी न भी आ पाओ
मेरे पास
अपनी किन्हीं मजबूरियों के कारण
या

अकारण ही जानबूझ कर
तो भी
तेरी-मेरी आत्मगंध से भरी
ये हवाएं
आजन्म
मचलती रहेंगी,
बहकती रहेंगी,
महकती रहेंगी,
गुनगुनाती रहेंगी
मेरे आंगन में।



वक़्त को मेरा सलाम

जाने क्या कर दिया है वक़्त ने
कि कोई एक लम्हा
नहीं रह गया है मेरा अपना
मेरी सांसों से उतरने वाला
हर लम्हा
अर्पित हो रहा है--मुहब्बत की उस देवी के नाम
जो सिर्फ़ मेरे वास्ते है।
उसका अहसास
हर वक़्त जीता चलता है मेरे साथ
और उसकी रूह की खुशबू
मिल गई है, मेरी रूह की
खुशबू के साथ।

हर सुबह जलता है जो सूरज
वह दरअसल मुहब्बत की रोशनी है

और चांद की चांदनी
उसी पाकीज़ा रोशनी का
खिला हुआ असर।

शहर चाहे पा जाए मौत
और आकाश से बरसने लगें
बदबू के बादल–
चाहे लहू की बजाय
पानी बहने लगे इनसान के अंदर–
पर एक फूल महकता रहेगा ताउम्र;
हमारी मासूम मुहब्बत का फूल।

खुदा की जन्नत मुबारिक हो उसी को
मेरे वास्ते यही लम्हे,
यही अहसास,
यही खुशबू काफ़ी है।
मेरी रूह, जन्मों-जन्मों तक के लिए
पा गई है ज़िंदगी।
यह सब
आज के वक़्त की मेहरबानी है
आज के इस वक़्त को
मेरा दिली सलाम।



तुम्हारी हंसी

तुम्हारे पास बेहद हंसी है
अंजुरि भर दे दो—
पर बदले में कुछ न मांगना
मेरे पास सिर्फ़ उदासी है।

मेरे पास सिर्फ़ उदासी है
ऐसा क्यों है
न आकाश बताता है कुछ
और न ही सागर
और जब आता है वसंत
तो सूखे पत्ते उगने लगते हैं
मेरे भीतर
उन पत्तों को हरा कर सकती है
तुम्हारी हंसी;
सिर्फ़ तुम्हारी वासंती हंसी।

तुम्हारे पास बेहद हंसी है
अंजुरि भर दे दो—
पर बदले में कुछ न मांगना।
मेरे पास सिर्फ़ उदासी है।



क्या यह तुम्हारी तरह सच है

क्या यह तुम्हारी तरह सच है
कि मैंने उस दिन तुम्हारे होंठों को
स्पर्श दिया था अपने होंठों से
और नहाया था
नशीलो आग की नदी में।
तुम आंखों में सकुचाती शर्म की तरह
थरथराई थीं
और कमरा आंखें बंद करके
हमारे पहले चुम्बन को
अपने रोम-रोम से पी रहा था।
जन्मों-जन्मों के बाद
हमने संगीत को बजते महसूस किया था
अपनी आत्मा में।

आज मेरे होंठों से कहता फिरता है कोई
कि तुम्हें वह स्पर्श
आकाश की ओर ले गया था
खुशबू से सराबोर हवा में
तैरी थीं तुम
और कामना की थी तुमने
कि मेरे होंठ
सदा-सदा जुड़े रहें तुम्हारे होंठों से;
कि चलते रहें हम
सुख के आकाश पर—हौले-हौले।

आकाश पर छाते हैं जब बादल
और कौंधती है बिजली
तब याद आती है मुझे
नशीली आग की नदी में नहाने की।
लगता है—
कभी अटूट नींद सोया था मैं
और देखा था एकइन्द्र धनुषी सपना
हालांकि वह सिर्फ़, क्षणों का चमत्कार था।

बताओ मुझे—
क्या सचमुच यह तुम्हारी तरह सच है
कि मैंने उस दिन तुम्हारे होंठों को
स्पर्श दिया था अपने होंठों से
और नहाया था
नशीली आग की नदी में।

लौट जाओ

कहां तक चलोगे मेरे साथ ओ साथी
लौट जाओ —
यह यात्रा अभी बहुत लम्बी है
और बहुत भयानक
खूंखार जंगल आएंगे अभी
पांवों के नीचे
और मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे पांव
काटने पड़ें किसी जगह पहुंच कर
जबकि हम
कहीं पर भी पहुंचे नहीं होंगे।

तुम्हारा मासूम हृदय फट जाएगा उस समय
ऐसे में कोई नहीं करेगा मुझे माफ़
इसलिए अच्छा है
कि लौट जाओ

और किसी झील के किनारे हंस रहे
वसंत को
उतार लो अपने भीतर
और खिलखिलाओ उम्र भर ।

मुझे छोड़ दो मेरी अंधी यात्रा के साथ
जो अभी बहुत लम्बी है
और बहुत भयानक
जो कहीं पर भी आंसुओं से खाली नहीं
जो अनन्त पीड़ाओं से लिथड़ी है ।

ओ मेरे साथी
कहां तक चलोगे मेरे साथ
लौट जाओ ।

●

संबंधों के बीच बहे
एक भरी-पूरी नदी

संबंधों के बीच दुःखदायी फासला है जो
आ पड़ी है वहां एक सख़्त चट्टान
जो शायद संबंधों को
नई आंखों के साथ जोड़ने से पिघल पड़े।
पर अभी सख़्त रहकर हमें खण्डित करना,
और हमारे हृदयों को चकनाचूर करना
उसका धर्म है।
और यह भी तो है
कि हम संबंधों की मासूमियत के प्रति
अभी बहुत कसैले हैं।
आषाढ़ में बरसती हैं जो फुहारें
उनकी आत्मा की ठंडक
हम अपनी आत्मा में कैसे महसूस करें
कि हो जाएं हम

एकदम नये और नये
कोई हमें
बचपन में खेली गई
आंख मिचौनी की तरह
भोला बना दे
कि संबंधों के बीच बहे एक भरी-पूरी नदी
और हम तैरते रहें सिर्फ़
नन्ही-नन्ही मछलियों की तरह ।
ऐसा कैसे हो
बताओ तो हमें आकाश ?

संबंधों के बीच दुःखदायी फासला है जो
वह बेहद दुःखदायी है ।



फूल

तुम्हारी हल्की भूरी आंखों से टपकते कतरे
सिर्फ़ मेरे होंठों के लिए हैं
इन्हें यूं ही ज़मीन पर
मत गिरने देना कभी ।
मेरे होंठों को छूते ही
बनेंगे ये फूल
जो ज़मीन /आसमान/ पाताल पर
पहले से कहीं नहीं होंगे ।

ये फूल
मुस्कराया करेंगे सुबह-शाम
और रात को
दोनों की देहों के नीचे महका करेंगे ।
वसंत के प्यारे मौसम में
हम खुद वसंत हो जाया करेंगे

और उड़ा करेंगे/नाचा करेंगे
आकाश के आंगन में ।
रंगीन तितलियों के इन्द्रधनुषी पंख
हमारे रोम-रोम में फड़फड़ाया करेंगे
हमारी सांसों से उतरा करेंगी
गज़लें ।
खुशबुओं से लिखा करते हैं जो
मुहब्बत के प्यारे-प्यारे गीत
वे पूजा करेंगे
उन फूलों की--
जो मेरे होंठों पर खिलेंगे
तुम्हारी हल्की भूरी आंखों से टपकते
कतरों की छुअन से ।



वह क्षण चिर शाश्वत है

मेरे रोम-रोम में भरा है
उस प्रथम चुम्बन का स्वाद
जो अलौकिक है।
फूलों की सूक्ष्म कोमलता
मेरी अनुभूतियों से
सदा-सदा के लिए जुड़ गई है।
अब, जब कभी
इन्द्रधनुष लहराया करेगा
आकाश की छाती पर;
मुझे याद आया करेगा
वह प्रथम क्षण--
जो उसी क्षण अन्तिम था
और वसंत महका करेगा
मेरी सांस-सास में,
मेरी धड़कन-धड़कन में,

मेरे रेशे-रेशे में,
और बर्फ की तरह पिघला करेगा समय।

कुंआरे क्षणों की महक
कोई उत्तर नहीं चाहती तुमसे—
एक सपनीली छुअन के साथ तुम
हर क्षण चूमती हो उसे।
प्यार का आसमानी गीत बनने की प्रक्रिया
बनती हो हर क्षण।
वह क्षण चिर शाश्वत है
और उसी चिर शाश्वत क्षण को
नींव बना लिया है हमने।
हम समाधिस्थ हो चुके हैं
देखो तो—
सूरज हमें देखकर कितना मुस्कराता है
सूरज का मुस्कराना
उस प्रथम चुम्बन की याद दिलाता है।



मन के किनारे-किनारे
न चलो

मेर मन के किनारे-किनारे न चलो
डूबो, डूबो पूरी तरह
मेरे मन की भीतरी गहराइयों में
और मुझे लगने दो
कि मैं / सिर्फ़ मैं ही नहीं रह गया हूं
और हो जाने दो मुझे
किसी प्रेयसी को समर्पित
कविता संग्रह की तरह।

जहां तक हो सके
यही होने दो तुम
कि कभी खण्डित न होने दो मुझे
देखना तुम—

कि मैं, लहरों पर थिरकता स्निग्ध जीवन
हो जाऊंगा
और तुम
उसी स्वप्निल जीवन की सांस।

मखमली स्वप्न नहीं भी पूरे होंगे तो क्या
हम पथरीले यथार्थ पर
जी लेंगे खुशी-खुशी
और फिर एक दिन होगा यही
कि हम पाएंगे उसे फूलों-सा कोमल
इन्द्रधनुष-सा सुंदर
और तुम्हारे होंठों के कोरों से
छलका करेगा हंसी का अमृत
जो सदा ज़िंदा रखेगा मुझे।

इसीलिए तो कहता हूं
कि मेरे मन के किनारे-किनारे न चलो
डूबो, डूबो पूरी तरह
मेरे मन की भीतरी गहराइयों में।



ओ ज़िद्दी स्वभाव वाली
सीधो-सादी लड़की

जब कभी सोचता हूं अपने बारे में
मुझे भरपूर याद आती है
ज़िद्दी स्वभाव वाली
वह सीधी-सादी लड़की
जो मेरे लिए हो गई है बांवरी
जो क्षण-क्षण खुद को न जी कर
जीती है मुझे;
मेरे ही लिए।

मेरी कामना के लिए
रखती है जब व्रत
अहसास होता है मुझे
कि वह / करोड़ों आकाशों से भी है विशाल
और उसकी अनन्त विशालता में

खो जाने का
मेरा अन्तिम लक्ष्य
मुझे हर क्षण उसकी
अनन्त विशालता का
देता रहता है अहसास ;
करोड़ों आकाशों से भी अधिक विशाल
उसकी अनन्त विशालता का ।

ज़िद्दी स्वभाव वाली
वह सीधी-सादी लड़की
कितनी व्याकुलता से
प्रतीक्षा कर रही है
मेरे आने की—
इसका अहसास करने की क्षमता
मेरे में कहां ?

उसके लिए खुदा का नाम
हो गया है मेरा ही नाम
और मेरा ही नाम
खुदा का नाम ।

व्यवधानों के असीमित महासागर
पार करने में लगा हूं मैं
कि ज़िद्दी स्वभाव वाली
वह सीधी-सादी लड़की
निराश नहीं है ।

आभार ओ लड़की ! आभार !
तुम्हें मैं क्या नाम दू
ओ लड़की

क्या नाम दूं ?
शब्दकोष शब्दहीन हैं
तुम्हारा असीम प्यार
शब्दों, अर्थों से परे है
तुम्हारी प्रतीक्षा
पूजनीय है
ओ ज़िद्दी स्वभाव वाली
सीधी-सादी लड़की ।

●

लौट रहा हूं

भीड़ भरे जंगल से होकर
लौट रहा हूं अपने शहर
लग रहा है कि
कट गये थे जो पंख
वे फिर से उग रहे हैं।
तुम्हारे भीतर से निकल कर
जाने क्यों भटक गया था मैं
और जाने क्यों निकलने दिया था
तुमने ?
मैं खामोश रहा था
बबूल के ठूंठ की तरह
और तुम—
सुना है अपने आपसे
कि बहुत रोई थीं तुम।
जो थे दर्दमय

वे दिन चले गए
और हो गए हैं इतिहास
अत: उन्हें भी प्रणाम ।

आज लौट रहा हूं अपने शहर
और तुम्हारे भीतर उतर कर
अखण्ड समाधि लूंगा अब
कभी न उठूंगा वहां से
और अब तुम्हारा भी धर्म है कि
कभी न छेड़ना मेरी समाधि
तुम्हारे और मेरे अनन्त सुख के लिए
और चिरन्तन शान्ति के लिए।



इस बार सर्दियों में

उन आसमान छूती चोटियों पर
जहां रूई के नाज़ुक और मखमली कणों-सी बर्फ
गिर रही है
आओ चलें–और बनाएं
बर्फ का घरौंदा।
तुम देखना–
हमारे पवित्र प्यार की गर्मी से
वह नन्हा-सा घरौंदा
पिघल कर बिखरेगा नहीं;
वह सूरज की तरह शाश्वत होगा
और खिल आएंगे वहां सफेद फूल
जो दहकते रहेंगे
सुर्ख अंगारों की तरह।
बहुत मासूम होंगे वे क्षण–
कृष्ण की बांसुरी धुन पर

ठगी-ठगी मुग्ध राधिका की तरह ।
और हम हंसते हुए धड़कते रहेंगे
एक-दूसरे के भीतर ।

इस बार सर्दियों में
हमारे जिस्मों ने छुआ है एक-दूसरे को
और हमारे जिस्मों के भीतर बहती
रक्त की गर्म नदी
उछल कर बही है आकाश की ओर।
ब्रह्माण्ड के सुखों को भुलाया है हमने
इस बार सर्दियों में ।

ओ मेरी प्रिये !
आओ चलें—और बनाएं
बर्फ का घरौंदा
उन आसमान छूती चोटियों पर
जहां रूई के नाज़ुक और मखमली कणों-सी बर्फ
गिर रही है ।



तेरी देह के पार है जो

तेरी देह के पार है जो
वह बजाता है मेरा तार-तार
और उड़ाता है मुझे–तितलियों की तरह ।

माध्यम तो देह ही है न
इसीलिए चूमता हूं उसे
और चाटता हूं, जैसे शहद ।
श्रद्धा से झुक आता है आकाश
ऐसे में लगता है जैसे
झरने के नीचे बैठे रहे हों घण्टों—
श्रद्धा से झुके आकाश पर
लिखते रहे हों कविता—
गुपचुप हंसते रहे हों निर्मल नीली हंसी—
नाक की नोक पर छलक आए पसीने को
पीते रहे हों आंखों से–

और किसी खुशी से तुम्हारे पांवों की पायल
बज उठती रही हो अपने आप।
हवा के रेशे-रेशे मे भर उठी हो
हमारी सांसों की मादक खुशबू।

तेरी देह के पार है जो
वह सिर्फ़ सुख देना जानता है
और मेरी देह को ग़ज़ल बना देना।
बता—तू ही बता
क्या है वहां
जो बजाता है मेरा तार-तार
और उड़ाता है मुझे—तितलियों की तरह।



सागर-सी तुम्हारी गोद

मुझे जब भी रोना आए
और आंसू बहें झरनों की तरह
सागर -सी तुम्हारी गोद चाहिए
और कांपती अंगुलियों का स्पर्श ।

क्या जानती हो तुम
कि मेरा वह रोना
हवाओं की खनकती हंसी से भी बढ़कर
लगेगा मुझे
जो अभी सिर्फ़ रोना लगता है
यातनामय रोना ।
और झरते हैं
कंटीली पीड़ाओं के गंधहीन फूल;
भेद डालते हैं जो
मर्म की सूक्ष्म सतह

और रोम-रोम को झकझोरते हैं।

सागर-सी तुम्हारी गोद
अभी नहीं है न मेरे पास
और न ही तुम्हारी काँपती अंगुलियों का
कंपकंपाता स्पर्श

तभी तो अपना रोना
हवाओं की खनकती हंसी-सा नहीं लगता
सिर्फ रोना लगता है
यातनामय रोना।

सुनाओ मुझे कंपकंपों का संगीत

शीतल सुन्दर चांदनी-सी तुम झरो हर पल
मेरे रोम-रोम में झरो—
सूरज की सातरंगी किरणों-सी तुम
मेरे अन्तस को अपने अस्तित्व से रंगो—
मेरी सांसों में तुम
मादकता-सी बहको—
कमल पांखुड़ी से अपने होंठों पर
महकाओ खुशबू
और मेरे रक्त की बूंद-बूंद में
घुल जाओ खुशबू के साथ
कि मैं वह हो जाऊं
जिसे तुम देखो—तो आकाश बन जाओ
निर्मल नीला आकाश
कि जिसे मैं देखूं—तो संगीत बन जाऊं
हवाओं में तैरता संगीत।

ओ मेरी प्रिये !
तुम मुझे अपना वह सब दे दो
जो सिर्फ तुम्हारा अपना है
वह सिर्फ मेरा अपना हो जाने दो
ओ मेरी प्रिये !

अधखुली पलकों के बीच हैं जो तुम्हारी
हल्की भूरी अखियां
उन्हें जी भरकर छलकने दो खुशी से
और बहने दो सुख, मेरी नस-नस में ।
अपनी अंगुलियों के पोरों से
मेरी देह का स्पर्श करके
सुनाओ मुझे कंपकंपी का संगीत
और नथनी को चूमकर
आत्मा तक थरथराने दो मुझे ।

ओ मेरी प्रिये !
चारों ओर चल रही हैं जो गर्म अफ़वाहें
वे दरअसल
प्रेम को देखना चाहती हैं नंगा
और फिर उस पर हंस-हंसकर
फेंकना चाहती हैं गन्दी दृष्टि
क्योंकि वे खुद भीतर से
गन्दगी की हद तक गन्दी हैं
ओ मेरी प्रिये !
बता दो इन कुटिल अफ़वाहों को
कि प्रेम किसी लड़की का नंगा जिस्म नहीं ।

और समाज को उछाल दो आकाश की ओर
लटका रहने दो उसे त्रिशंकु-सा।
तुम निर्भय होकर
दौड़ती चलो मेरे साथ
जहां तक पहुंच रहे हैं मखमली ख्वाब
वहां तक दौड़ती चलो–खिलखिलाती हुई।
देखना तुम कि हमारे पांव
दौड़ते-दौड़ते गाएंगे रस भरे फूलों के गीत;
ओस की बूंदें
मिटाएंगी हमारे तलवों की

जन्मों की प्यास;
और कंकड़ कांटे पिएंगे हमारा रक्त
तुम घबराना नहीं—
ओ मेरी प्रिये !

और जब हम पहुंचेंगे अपनी मंज़िल पर
हमारे तितलियों से रंग-बिरंगे पंख
उग आएंगे और हम
आकाश के पार गुम हो जाएंगे
अफ़वाहों को ठेंगा दिखाकर,
समाज को त्रिशंकु-सा छोड़कर।

ओ मेरी प्रिये !
शीतल सुन्दर चांदनी-सी तुम झरो हर पल
मेरे रोम-रोम में झरो

और तुम मुझे अपना वह सब दे दो
जो सिर्फ तुम्हारा अपना है
वह सिर्फ मेरा अपना हो जाने दो
ओ मेरी प्रिये !



इस जन्म का यह आषाढ़

जन्मों पहले छूट गया था साथ
और भटकते रहे थे हम
जाने कितने जन्म और कितने युग
एक-दूसरे को पाने के लिए ।
परन्तु इस जन्म का यह आषाढ़
मिला गया है हमें ।
मासूम श्रद्धा,
बेहद प्यार,
और संयमित निष्ठा
लाई है अपना रंग
इसी आषाढ़ में ।

भयानक तपती लू के बाद हमें मिली है
आषाढ़ की पहली फुहार की ठंडक;
हमारी आंखों से झर रहे हैं आंसू

अनन्त और असीम खुशी के।
हम महक रहे हैं गुलाब दल की तरह
और चले हैं साथ-साथ
रोम-रोम से गाते हुए।

अब हर कोई यह सुन ले
कि हमें मिलने का सुख मिला है
अनन्त जन्मों के बाद
और अब अलग हों
यह नहीं होगा अनन्त जन्मों तक।

तेरे-मेरे दिन

बहुत रो लिए दिन, चुपके-चुपके
ठहरे जल से
तेरे-मेरे दिन ।
अब बहा करते हैं
सपनीले सागर की ओर
इन्द्रधनुषी हंसी से भरे,
और, आसमानी ख़ुशी से भरे
तेरे-मेरे दिन ।
आंसुओं को अब
नमकीन स्वाद से क्या मतलब—?
रात को अब
रूह तोड़ती ख़ामोशी से क्या मतलब—?

देखते-देखते कुछ ऐसा हुआ
कि अब कौन उड़ाये हंसी

और काटे, हवा को चीरते पंख
और दबोचे गर्दन
रोम-रोम से फूटते गीतों की।
कुछ ऐसा हुआ
कि बदल गया विधि-विधान
ज़मीन-आसमान।

वक़्त ने किया करिश्मा
और हमसे भी प्यारे
हमारे हो लिए दिन, चुपके-चुपके
तेरे-मेरे दिन।



वे क्षण

तुमने दिए नहीं जो
मैंने ले लिए वे भी क्षण, बिना कोशिश के
चाहे दुर्गन्ध ही सही उनमें—
अहम सवाल है यह
कि तुमने दिए क्यों नहीं वे क्षण
जबकि तुम
श्रद्धा से नहाई हुई थीं
मेरे प्रति समर्पिता
कहलाई हुई थीं ।

●

प्रेम के नाम पर

जो हुआ
प्रेम के नाम पर हुआ
अन्तस में बह उठी—मीठे और शीतल जल की नदी;
अधरों पर महके—हंसी के फूल;
और आकाश ने गाए
कामनाओं के गीत;
सूरज, चांद और सितारे
प्रेम को देने आए
अपनी शाश्वत रोशनी।

जो मन्दिर
प्रेम की नींव है
वहां हवा की जगह—
प्रेम ही प्रेम है,
श्रद्धा ही श्रद्धा है,

निष्ठा ही निष्ठा हैं
अपनी पूरी मासूमियत के साथ
और ईमानदारी के साथ
जितना कुछ कोई ले ले वहां से
बढ़ जाता है वहां उससे दोगुणा
और अपने भीतर
उससे भी दोगुणा।

हमने ऐसा किया
जीने का अर्थ पा लिया।

ओ मेरी प्रिये !
प्रेम के नाम पर जो हुआ
वह ऐसा हुआ
कि कई जन्म
जी लिए हमने एक साथ।



धूप की तरह खिला वर्तमान

मेरे अधरों पर हंसी बन छा गईं तुम
कि मैं भूल गया
जन्म-जन्म से पाई उदासी;
मेरे प्राणों में तुम्हारे प्राणों की खुशबु
घुल गई ऐसे
जैसे पहाड़ों से उतरी हुई नदी
सर्वस्व के साथ मिल जाती है सागर में।

अचानक ही हुआ यह
तभी तो हमारे आगे के जन्म
चौंक कर देखने लगे यह सिद्धि
और उन्होंने पढ़े ऐसे मंत्र
कि हम सदा के लिए बंध गए उनसे।
पिछले जन्म नाच उठे खुशी से
और की उन्होंने पुष्पवर्षा।

बिछोह के सारे अर्थ
हो गए हैं बेअर्थ
जीवन अब हंसता गाता झरना है
और धूप की तरह खिला हुआ वर्तमान
खिलखिलाते भविष्य की नींव है ।



आंखों के ऊपर चल कर

ओ मेरी प्रिये !
तुम्हारी आंखों के ऊपर चल कर
पहुंचा हूं सूक्ष्म तक
और पाए हैं मैंने सौंदर्य शास्त्र के वे रहस्य
जो सोचो—
तो अभी भी लगते हैं रहस्य ।

यात्राओं में यह यात्रा
जी लेता है जो पूरी तरह
वह इस सतह से उस सतह तक
फैला रहता है खुशबू की तरह ।

बिना पंखों के उड़ना क्या होता है
कोई मुझसे जाने
अंजुरि बनाकर पूजता हूं जब सूरज

तो लगता है
सूरज मेरे भीतर है
और मैं सूरज के भीतर।
बिना पंखों की उड़ान से ही होता है यह
और उस जी हुई यात्रा का हाथ है
इस उड़ान में
ओ मेरी प्रिये !

●

अगली यात्रा

जहां से हमारी यात्रा ने मोड़ लिया है
वहां पलाश का मुस्कराता हुआ जंगल है
और ज़मीन के नीचे वे पवित्र रूहें
जिन्होंने मुहब्बत के लिए
अपने जिस्मों को तबाह किया है
सभ्यता (?) के नाम पर।
वे पवित्र रूहें
सदियों से वहां
बिना ज़मीन और आसमान के घरौंदों में
रह रहीं हैं;

मुहब्बत के उस मोड़ से
अगली यात्रा पर जाने वालों को
आशीर्वाद देने के लिए।
और
ओ मेरी प्रिये !

यह हमारा सौभाग्य है कि उन्होंने हमें
सूरज की तरह जगमगाता आशीर्वाद देकर
अगली यात्रा पर भेजा है ।

ओ मेरी प्रिये !
तुमने देखी होगी पलाश के जंगल की
खुशबूदार गीली मिट्टी
जिस पर बिछे थे पलाश के लाल-लाल फूल
पर समझ नहीं पाई होंगी उसका अर्थ—
उन पवित्र रूहों की सफेद आंखों से छलके
अनन्त खुशी के आंसुओं का गीलापन था वहां ।
और सुनो—
उस रात वहां जश्न हुआ था
और गाए थे रूहों ने
हमारी अगली यात्रा के लिए
मंगल कामनाओं के गीत ।

ओ मेरी प्रिये !
हम चुपचाप अगली यात्रा पर निकल आए हैं
उनके आशीर्वाद और मंगल कामनाएं
हमारी पीठ पर हैं;
पांवों से चिपकी है
पलाश के जंगल की खुशबूदार मिट्टी;
आंखों में है
पलाश के फूलों-सा सौंदर्य बोध;
और अन्तस में जगमगाता सूरज ।

अब हमें क्या चिन्ता—ओ मेरी प्रिये
हंसते-गाते-खिलखिलाते
और कभी-कभी रोते हुए
बढ़ते जाना है हमें अपनी मंज़िल की ओर
निर्मल नीले आकाश की ओर।



हमारे प्रकाशन द्वारा प्रकाशित
लेखक की अन्य कृतियां

अन्तिम युद्ध की चाह

आपात्स्थिति से पूर्व की, आपात्कालीन तथा आपात्काल के बाद काव्य रचनाओं का अभूतपूर्व संग्रह । इन कविताओं के अतिरिक्त बहुत-सी और भी चुनी हुई कविताएं ।

प्रथम संस्करण : 1977 मूल्य : मात्र दस रुपये (10.00)

उल्कापात

अर्थिक विषमता से उत्पन्न यातनामय परिस्थितियों से जूझते व्यक्ति की कहानियां। ऐसे व्यक्ति की कहानियां जो मूक होकर यंत्रणाओं, यातनाओं, त्रासदियों को भोग रहा है। शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक दृष्टि से अशक्त व्यक्ति की दर्द भरी कहानियां।

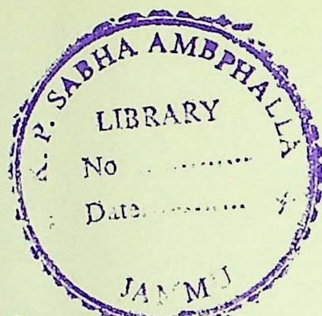
प्रथम संस्करण : 1977 मूल्य : मात्र दस रुपये (10.00)

प्रथम संस्करण लगभग समाप्त।

आग जल रही है

वाद और गुटों से मुक्त युवा कवि द्वारा (अगस्त 77 से सितम्बर 78 तक) लिखित कविताओं का संग्रह। राजनीतिक अस्थिरता और अनैतिक्ता से उत्पन्न रुग्ण और अंधकारमय वातावरण का सीधा प्रभाव इस संग्रह की कविताओं पर है। आस्था और विश्वास की नींव पर खड़ी ये कविताएं संप्रेषणयुक्त हैं। सूक्ष्म प्रेम भावों को अभिव्यक्त करने वाली कुछ चुनी हुई कविताएं भी प्रस्तुत संग्रह में हैं।

प्रथम संस्करण : 1980 मूल्य : मात्र बीस रुपये (20.00)

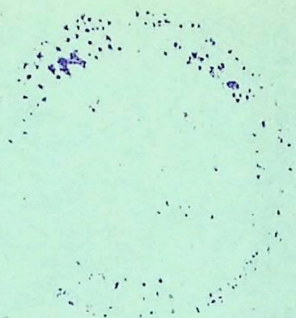


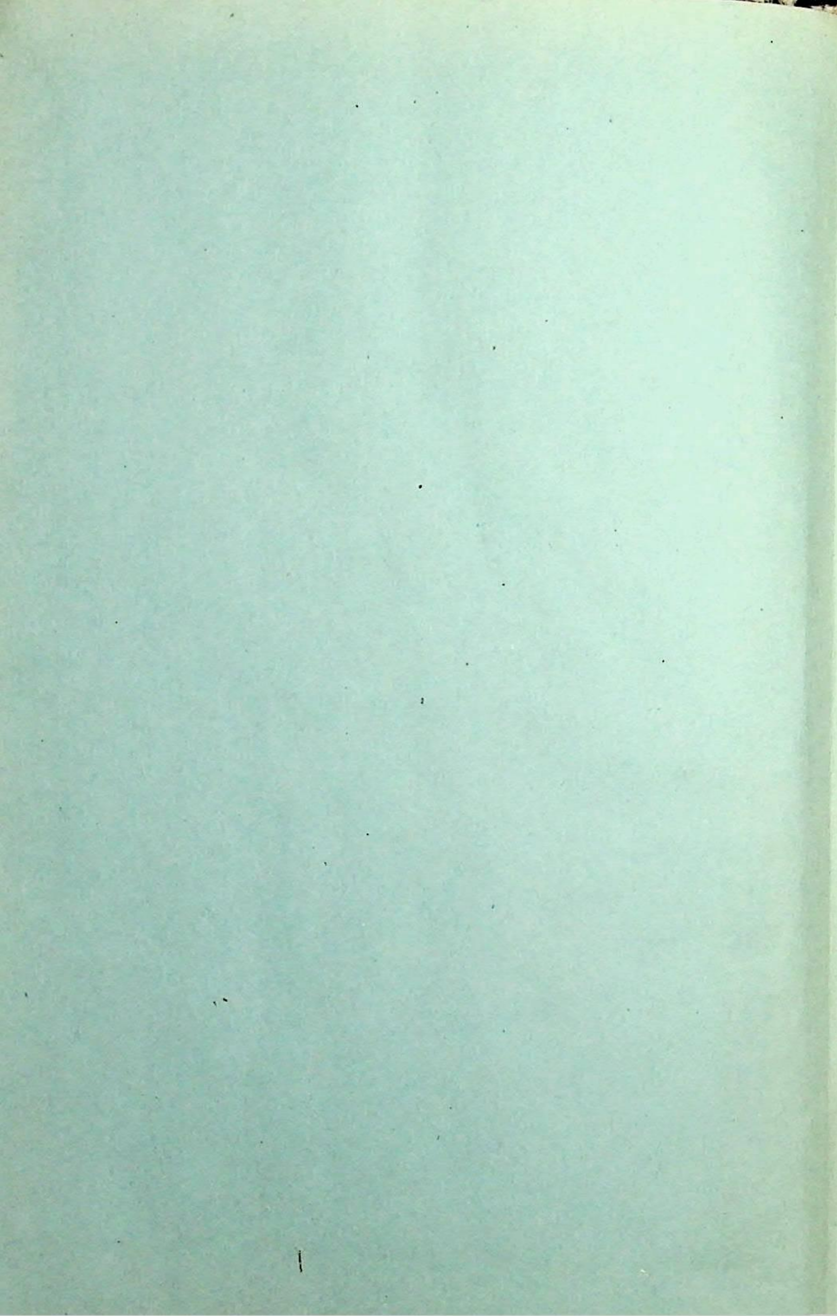
लेखक की प्रकाश्य कृतियाँ

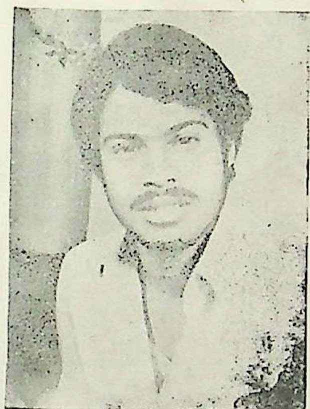
1. यातना युग (उपन्यास)
2. एक युग पीड़ा का (ग़ज़ल संग्रह)
3. देश का अंतहीन दर्द (कविता संग्रह)
4. संजीवनी विद्या (बाल उपन्यास)
5. अमर कहानियां (बाल कहानियां)

अहिन्दी भाषी क्षेत्र का एकमात्र हिन्दी प्रकाशन संस्थान

निस्तंद्र प्रकाशन







जन्म : ५ जनवरी, १६५४

अन्य रचनाएं :

कहानी सग्रह

उल्कापात

काव्य संग्रह

अन्तिम युद्ध की चाह

आग जल रही है

धूप की तरह खिला वर्तमान

हमारे प्रकाशन

कहानी संग्रह

उल्कापात — बलनील देवम्

काव्य संग्रह

अन्तिम युद्ध की चाह — बलनील देवम्

आग जल रही है — "

धूप की तरह खिला वर्तमान — "

बादलों में क़ैद सूर्य — आज़ाद कुमार मानव 'नाहर'

आहत चीड़ें — अशोक जेरथ

हमारी पुस्तकों के अधिकृत वितरक :

१. सीमान्त प्रकाशन
६२२, कूचा रूहेला खाँ, दरियागंज
नई दिल्ली-११०००२

२. दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा. लि.
ई-३, रानी झांसी रोड, भंडे वाला एस्टेट,
नई दिल्ली-११००५५

अहिन्दी भाषी राज्य का एकमात्र हिन्दी प्रकाशन संस्थान

निस्तंद्र प्रकाशन

जम्मू (तवी)